लोकतान्त्रिक आन्दोलन की चुनौतियां विषयक अन्तरक्रिया कार्यक्रम

०१ फरवरी, २०१०, आई. आई. सी, लोधी रोड, नई दिल्ली

कार्यक्रम के आदरणीय सभाध्यक्ष, मञ्च पर आसीन विशिष्ठ व्यक्तित्व एवं सहभागी साथियों
सर्वप्रथम, मैं आप सभी को अपनी पार्टी नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (एमाले) की ओर से हार्दिक अभिवादन करती हूँ।

नेपाली राजनैतिक इतिहास में आज के दिन को एक काला दिन के रुप में लिया जाता है। पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र ने आज के ही दिन ५ वर्ष पहले लोकतान्त्रिक मूल्य और मान्यताऐं के बरखिलाफ जनता की सार्वभौम एवं लोकतान्त्रिक अधिकारों को अपहरण कर राजतन्त्रात्मक निरंकुश राज्य व्यवस्था लादने का भरमग्दुर प्रयास किया था।

राजशाही के यह कदम के बाद देश भीषण द्वन्द्व के कगार पर खडा हुआ। कथित जनयुद्ध और ज्ञानेन्द्र तानाशाही की भयावह आक्रमक परिस्थिति के बीच शान्तिकामी नेपाली जनता ने एक साथ उदण्डता, उग्रता और राजशाही के तमाम हरकत के बिरूद्ध शान्तिपूर्ण जनआन्दोलन का शंखघोष कर दिया। कुछ ही समयान्तराल में अजेय जनशक्ति ने सञ्चालित शान्तिपूर्ण जनआन्दोलन मार्फत राजशाही के दुष्प्रयास को नामेट ही नही बल्की खत्म कर दिया, हिंसाप्रेमी माओवादी द्वारा दशक से सञ्चालित सशस्त्र जनयुद्ध का औचित्य समाप्त कर शान्तिपूर्ण आन्दोलन ही प्रमुख बना। यह ही आन्दोलन के बल पर लोकतन्त्र बहाल हुआ। शदियों से कायम रहा राजतन्त्र समाप्त हुआ और राजतन्त्रात्मक राज्य व्यवस्था में बदलाव आया। अन्तरिम संविधान बना। संविधानसभा का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। निर्वाचित राजनैतिक दलों ने कमान सम्हाली। विद्यमान द्वन्द्व व्यवस्थापन और शान्ति प्रक्रिया प्राथमिक मुद्दा बना। जनानुमोदित विधि के तहत राज्य चलने लगा। संविधानसभा निर्वाचन द्वारा निर्वाचित सर्वदलीय और सर्वपक्षीय जनप्रतिनिधि के बीच संविधान रचना प्रक्रिया जारी है।

जारी संविधान रचना को निर्धारित समय सीमा के अन्दर अन्तिम रुप देना, विभिन्न प्रकार के सामाजिक विभेद को अन्त करना, द्वन्द्व व्यवस्थापन और शान्ति प्रक्रिया को निष्कर्ष मे पहूचाना ही हमारे लिये आज का प्राथमिक और मूल मुद्दा है। राष्ट्रीय राजनीति के अन्दर छायी हुई विद्यमान संक्रमण, गतिरोध और खासकर शान्ति प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्ध दल बल के व्यवहारिक असहयोग के चलते यह एक भयावह चुनौति भी है।

यह प्रक्रिया में और यहाँ तक आ पहूचने में आप सर्वाधिक निकट के पडोस के मित्र राजनैतिक दल, विभिन्न संघसंस्था, अन्य जिम्मेदार इकाइयां और भाई साथियों का जो सहयोग, सद्भाव और सहिष्णुवत् व्यवहार कर दिखाया, अन्यान्य अन्तरराष्ट्रीय समुदाय का भी गम्भीर ध्यानाकर्षण कराने में हमें आपका मद्दत मिला, जिसके बगैर नेपाल का आजका जैसा सार्थक राजनैतिक परिवर्तन सम्भव नही था, मै आप सभी का और उनका, जो दूरदराज में हैं, का भी सुक्रिया अदा करती हूँ। और इस मौके पर मैं पुनः आप सबको हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ।

ऐतिहासिक और स्थायी रूप से देखा जाय तो नेपाल-भारत दोनों देश बीच का सम्बन्ध बहुत ही प्रगाढ है। स्रौहार्दपूर्ण है। परस्पर में निर्भर जनस्तरीय एवं मैत्रीपूर्ण है। दोनों पृथक-पृथक सार्वभौम राष्ट्र है। हमारे बीच कुछेक परम्परागत साँस्कृतिक एवं सामाजिक मान्यताऐं में एकरुपता जरूर है। कई तरह की एकरुपता होते हुये भी अलग-अलग इतिहासकालिन पहचान के स्वाधीन और स्वतन्त्र राष्ट्र के हम स्वलम्बन नागरिक है। यह ही एक कारण है कि हमारे बीच का सम्बन्ध अन्यान्य देशों के तुलना में सर्वाधिक भिन्न है। भिन्न होते हुये भी अभिन्न है। और किसी के तुलना में महत्वपूर्ण एवं विशेष है।

दोनों देशों के जनता ने अपनी-अपनी प्रगति और समृद्धि के लिए एक आपसी और परस्पर निर्भर सहयोग की भूमिका अदा की है और करते आ रहे है ।

लोकतन्त्र एवं सामाजिक न्याय की लम्बी लडाई के बीच में राजनैतिक अथवा अन्यान्य नामधारी समूह, उच्छृंखल एवं उग्रतत्व पैदा होते है, और केवल अपने नीहित स्वार्थ के लिए दोनों देशों की ऐसी ऐतिहासिक मित्रता को तोड-मरोड कर रखने का दुष्प्रयत्न करते है और समय-समय पर करते आ रहे है, ऐसा होता आ रहा है । विराट भूमि और विशाल जनसंख्या लिये हुये दो बढे पडोसी देश के बीच हम अवस्थित है । यह कुछ तत्व इस अवस्था का भी गलत प्रयोग कर एकापस में मनमुटाव बढाने और कटुता पैदा करने का नाकामी से विफल प्रयास करते आ रहे है । इस से हमे आज भी उतना ही सावधान, सजग और सचेत होना है, जितने हम परस्पर सुरक्षा की बात करते है ।

नेपाल-भारत बीच का सम्बन्ध दक्षिण एशिया में ही बडा अर्थ रखता है । एशिया, जहाँ विश्व में नई शक्ति के रुप में उभर कर आ रही है । हम सब के लिए यह गर्व का विषय है । हम सबको मिलकर इसको और जोड बल लगाना होगा । इसके के लिऐ दक्षिण एशिया के सन्दर्भ में हम लोग ही अग्राधिकारी है । यह ही पृष्ठभूमि के चलते पूरे एशिया भर में हमारी आपसी प्रगाढ जनसम्बन्ध और भाइचारा को और बढाना होगा तथा परस्पर सद्भाव, सम्मान और सहयोगी भाव से सिर्जनात्मक की ओर गति देना होगा ।

जनसहयोग, जनसेवा, जनलाभ, जनस्वास्थ्य, जनपर्यावरण आदि के नाम पर क्रियाशील संघ संस्थाओं को जनआधारित और आम तौर पर जनसरोकारित क्षेत्र की ओर ध्यानाकर्षण करना होगा । आधारभूत प्रकृति के काम का पहचान, आधारभूत ढंग से ही यह काम का उठान और कुशल सम्पादन कर पाने के लिए प्रेरित करना होगा । आत्मनिर्भरमुखी जनसहभागिता और जन श्रमदान को भी प्रेरित करना होगा । इससे ही लक्ष्यित वर्ग का हित और उत्थान कर पाना सम्भव है । इसके लिए हम स्वयं को अग्रसर होकर पहल लेना होगा । परिवर्तित आज के सन्दर्भ में एक नई तरह से जन-जन से जन-जन में एक सन्तुलित और सुमधुर सम्बन्ध स्थापित करना होगा ।

हरेक देश की सार्वभौमिकता एवं स्वतन्त्रता की रक्षा एवं सम्मान, मानवीय मूल्य-मान्यताओं के सम्मान और परस्पर सहयोग से ही हम आगे बढ सकते है । समय परिवर्तन के साथ-साथ, विश्व में बहुत सी नई तरह की चुनौतियाँ उभर कर आई है । आतंकबाद, उग्रपन्थता, सामाजिक असुरक्षा, असन्तुलित अर्थतन्त्र, पर्यावरणीय सुरक्षा आदि आज के सन्दर्भ में मुख्य चुनौतियाँ है । इससे निपटना हम सब की समान जिम्मेदारी है । सम्मानपूर्ण भागीदारी है । इससे ही दक्षिण एशिया के अन्दर लोकतन्त्र सुनिश्चित हो सकता है । लोकतान्त्रिक राज्य व्यवस्था शत प्रतिशत जनभावनाओं से मुखरित हो सकती है । मानव अधिकार और इसके तमाम क्षेत्राधिकार, सामाजिक सुरक्षा, सीमा सुरक्षा, परस्पर मित्रता और प्रगाढ बन सकती है । इसमें ही हम सबकी भलाई है । धन्यवाद !

दिनाँङ्क : ०१ फरवरी, २०१०, दिल्ली

विद्यादेवी भण्डारी
उपाध्यक्ष, नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (एमाले) ।